

अम्बे तू है जगदम्बे काली

संपूर्ण आरती • हिंदी पाठ

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

तेरे भक्त जनों पर माता, भीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ी माँ, करके सिंह सवारी॥
सौ-सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली।
दुष्टों को तू ही ललकारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

माँ बेटे का है इस जग में, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर ना, माता सुनी कुमाता॥
सब पे करुणा बरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुखड़े निवारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

नहीं माँगते धन और दौलत, न चाँदी न सोना माँ।
हम तो माँगें माँ तेरे चरणों में, इक छोटा सा कोना॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को सँवारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
अपना हाथ सर पर रख दो माँ, संकट हरने वाली॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली।
भक्तों के कारज तू ही सारती।
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥

अम्बे तू है जगदम्बे काली

सरल हिंदी भावार्थ • पढ़ने और प्रिंट करने की जानकारी

पद 1

माता को अम्बे, जगदम्बे, काली और दुर्गा नामों से प्रणाम किया गया है। भक्त उनकी स्तुति और आरती करते हैं।

पद 2

संकट में पड़े भक्त सिंह पर सवार, आठ भुजाओं वाली माता से रक्षा की प्रार्थना करते हैं।

पद 3

माँ और संतान के पवित्र रिश्ते का उदाहरण देकर माता की करुणा का स्मरण किया गया है।

पद 4

भक्त धन-दौलत के बजाय माता के चरणों में स्थान माँगता है। वह उनकी शरण और कृपा चाहता है।

पद 5

पूजा की थाली लेकर भक्त माता से आशीर्वाद, संकट से रक्षा और भक्ति की प्रार्थना करता है।

पाठ में छोटे क्षेत्रीय शब्दभेद मिल सकते हैं।

यह सरल भावार्थ है, शब्दशः अनुवाद नहीं।

फल और कृपा का वर्णन धार्मिक आस्था है; गारंटी नहीं।

प्रिंट: A4 कागज और "Fit to page" विकल्प चुनें।